Economics

B.A. Part II Hons

Paper - 4

Module - 1

Manjari Nath - Lecture No - 45

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार :-

हैबरलर का अवसर लागत सिद्धान्त :-

हैबरलर का अवसर लागत सिद्धांत, किसी के सिद्धान्त की आगे की कड़ी है। यह सिद्धान्त जिस रूप में तुलनात्मक लागतों के सिद्धान्त की व्याख्या करता है उसे उसने स्पष्टीकरण वक्र कहा है। अवसर लागत सिद्धान्त कहता है कि यदि कोई देश वस्तु X अथवा वस्तु Y का उत्पादन कर सकता है तो X-वस्तु की अवसर लागत उसकी वस्तु Y की उस मात्रा के बराबर होगी जो उसे वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए छोड़नी पड़ेगी। इस प्रकार दो वस्तुओं की परस्पर विनिमय दर उनकी अवसर मात्राओं के रूप में व्यक्त की जाती है।

मान्यताएँ (Assumptions) :-

हैबरलर के सिद्धान्त की निम्नलिखित मान्यताएँ हैं :

(1) केवल दो ही देश हैं A ~~अथवा~~ एवं B

(2) प्रत्येक देश के पास उत्पादन के दो साधन

ई - श्रम तथा पूँजी।

(3) प्रत्येक देश दो वस्तुओं x तथा y का उत्पादन कर सकता है।
(4) साधन तथा वस्तु बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता है।
(5) प्रत्येक वस्तु की कीमत उसकी सीमान्त लागतों के बराबर है।
(6) प्रत्येक साधन की कीमत प्रत्येक रोजगार में उसके सीमान्त उत्पादकता मूल्य के बराबर है।
(7) प्रत्येक साधन की पूर्ण गतिशीलता है।
(8) प्रत्येक देश में पूर्ण रोजगार है।
(9) प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं होता।
(10) दोनों देशों के बीच साधन अगतिशील है।
(11) दोनों देशों के भीतर साधन पूर्ण रूप से गतिशील है।
(12) दोनों देशों के बीच व्यापार पूर्णरूप से स्वतन्त्र और अबाधित है।

इन मान्यताओं के दिए होने पर उत्पादन संभावना वक्र हमें यह बताता है कि कोई देश उपलब्ध प्रौद्योगिकी से साथ उत्पादन के साधनों का पूर्ण-उपयोग करते हुए दोनों वस्तुओं की अधिकतम मात्रा से कितने विविध वैकल्पिक संयोग बना सकता है। उत्पादन संभावना वक्र की ढलान एक वस्तु की उस मात्रा को मापती है जो देश को दूसरी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए छोड़नी पड़ेगी यानि उसकी रूपान्तरण की सीमान्त दर (Marginal Rate of Transformation) है।

Scanned with CamScanner